हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श

संपादक
डॉ. हर्षलता शाह

ISBN : 978-81-932362-3-9
प्रथम संस्करण : सितम्बर 2016

संपादक
डॉ. हर्षलता शाह

प्रकाशक :
सृजनलोक प्रकाशन
वशिष्ठ नगर, आरा (बिहार) - 802301
मोबाइल : 7654926060
E-mail: srijanlok@yahoo.com

मुद्रक:
आरव प्रिंटिंग पैक
ओखला फेज - I, नई दिल्ली
आवरण - नेट से साभार

HINDI SATHIYA ME AADIWASI VIMARSH
Edited by : Dr. Harshalata Shah

Published by : SRIJANLOK PRAKASHAN
Vashishth Nagar, Ara, Bihar- 802301

मूल्य - 495/-

15. रमणिका गुप्ता की कविताओं में आदिवासी विमर्श - **डॉ. वी. जयलक्ष्मी** 52
16. आदिवासी और धर्म परिवर्तन - **डॉ. पी. वी. वनिता** 57
17. राकेश कुमार सिंह के 'जो इतिहास में नहीं है' उपन्यास में आदिवासी - **डॉ. पी. सरस्वती** 60
18. हिंदी आदिवासी केन्द्रित उपन्यासों में सांस्कृतिक परिवेश - **डॉ. श्रावणी भट्टाचार्य** 64
19. 'कब तक पुकारूँ' में चित्रित नारी जीवन - **डॉ. ए. फतिमा** 67
20. अल्मा कबूतरी में स्त्री-विमर्श - **डॉ. सुनीता जाजोदिया** 70
21. 'जंगल के दावेदार': राष्ट्रीय एवं सामाजिक परिस्थितियों का बिम्ब - **डॉ. प्रिया नायडु** 75
22. भवानी भाई के हृदय का गीत-सतपुड़ा के घने जंगल - **डॉ. सुधा त्रिवेदी** 78
23. तेजिंदर के उपन्यास 'काला पादरी' में आदिवासी चेतना - **डॉ. अनुपमा के.** 81
24. 'अल्मा कबूतरी' में कबूतरा जाति का शैक्षिक संघर्ष - **डॉ. अनिता पाटिल** 85
25. हिंदी साहित्य में आदिवासी स्त्री-जीवन (उपन्यासों के संदर्भ में) - **डॉ. मंजु बाला** 89
26. भारतीय लोककथाएँ एवं उसकी प्रवृत्तियाँ - **डॉ. एस. प्रीति** 93
27. 'पिछले पन्ने की औरतें' उपन्यास के विशेष संदर्भ में आदिवासी बेड़िया स्त्री - **डॉ. रजिया बेगम** 97
28. 'मिरि जीयरी' उपन्यास में चित्रित प्रेम की भावना - **डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम** 103
29. हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श 'अल्मा कबूतरी' के संदर्भ में - **डॉ. पी. पद्मावती** 109
30. विनोद कुमार शुक्ल की कविताओं में आदिवासी जीवन की व्यथा का चित्रण - **डॉ. बीना कुमारी** 115
31. 'जंगल के फूल' उपन्यास में चित्रित आदिवासी समाज - **डॉ. कुमार अभिषेक** 118

विनोद कुमार शुक्ल की कविताओं में आदिवासी जीवन की व्यथा का चित्रण

□ डॉ. बीना कुमारी नायर

आधुनिक हिन्दी साहित्य के आठवें दशक के साहित्यकारों में बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व के धनी विनोद कुमार शुक्ल का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। वे प्रकृति के साथ जीना और मरना चाहते हैं। आदिवासी जन जीवन को प्रधानता देने का प्रयास विनोद कुमार ने अपनी कविताओं में किया है।

आदिवासी समाज का प्रकृति एवं जंगल से प्रेम अद्वितीय है। आदिवासी समाज और जंगल के बीच माँ-बेटे का रिश्ता है। वे कभी माँ का नाश सहन नहीं करते। जरूरत से मुताबिक जितने पेड़ काटते हैं, उसका दस गुना लगा देते हैं। उनके सारे पर्व-त्योहार जंगलों पर ही आधारित है। आदिवासी अपनी आजीविका के लिए पूरी तरह जंगलों पर निर्भर रहते हैं। आदिवासी जंगल से जीते हैं और जंगल आदिवासियों से जीता है।

विनोद कुमार शुक्ल जी के कविताओं में आदिवासी जनजीवन का यथार्थ चित्रण :

'कोसाफल के तैयार होते ही' कविता के माध्यम से कवि का इशारा आदिवासियों के रहन-सहन की ओर है। ये लोग मेहनत कर के जंगलों में जाकर कोसाफल तोडकर लाते हैं। वे खुद नंगे रहते हैं और दूसरों को वस्त्र तैयार करने के लिए कोसाफल देते हैं। कवि का कथन है कि-

"जंगल के आदिवासियों को
उनकी संपूर्ण और अर्धनंगता में
कि कोसावस्त्रफल तैयार हो गया।
उसी स्पर्श को छूते हुए
आदिवासीजन कोसाफल तोडने निकल जाते हैं।"

कवि इस बात की ओर इशारा करते हैं कि भारत में आज भी बहुत सारे आदिवासी नंगे या अधनंगे रहते हैं। इस ओर कोई ध्यान नहीं देता है। जैसे भारत में अन्न उपजाने वाला किसान भूखा है उसी प्रकार कोसाफल तोड़नेवाले नंगे हैं।

'जंगल के दिनभर के सन्नाटे में' कविता में कवि विनोद कुमार कहते हैं कि आदिवासी लोग जंगल में बिना डरे महुवा बीनते हैं। उन्हें बाघ-शेर जैसे जंगली जानवरों से डर नहीं है। अकेली आदिवासी लड़की जंगल से महुआ बीन कर ले आती है, पर उस लड़की को बाजार ले जाकर महुआ बेचने में डर लगता